आंतर - भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

''आंतर भारती'' स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष
ॲड.आनंदमोहन माथुर

प्रेरक, संवर्द्धक-संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

प्रबंध संपादन कार्यालय
आंतर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहाजानी - 413 522 (महा.)
ईमेल-antarbharati.patrika@gmail.com

संपादन कार्यालय
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी -
विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी - 605014
ईमेल-editorbabuji@gmail.com

आंतर भारती, साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है.

मुख्य संपादक
प्राचार्य सदाविजय आर्य
09823156777

visit us : antarbharati.org.in

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबु
09843508506

संपादक
गंगाधर घुमाडे • ज्योतिराव लढ़के

मार्गदर्शक
एस.एन.सुब्बाराव • मुकुंद कुलकर्णी • मुरलीधर शहा

सहयोगी
मधुश्री आर्य •गोपाल सत्पुरे

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक / संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the Potentiality, Skill, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक) पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक सदाविजय आर्य द्वारा **साईराम ग्राफीक्स**, लातूर से गणेश ऑफसेट, उदगीर हेतु मुद्रित कर आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी से प्रकाशित.

इस अंक में...

संपादकीय -	इस वैचारिक अनुष्ठान को आपका सहयोग चाहिए	५
आंतर भारती - १	तुका म्हणे	७
आंतर भारती - २	बसव वचन	८
आंतर भारती - ३	तिरुवल्लुवर वाणी	१०
काव्य भारती - १	पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल	११
कथा भारती - १	संघर्ष और सफलता की गाथा बराक ओबामा	१२
चिंतन भारती - १	(स्कूली) प्रमाण पत्र से 'जाति' हटा दी तो	१४
चिंतन भारती - २	सृजनकर्ताओं के पंख मत छांटिए	१६
विशेष आलेख-१	अकाल से मुकाबला	२०
समाचार भारती-१	वाचन समृद्धि - एक सफल उपक्रम	२३
समाचार भारती-२	अंतर्राष्ट्रीय युवा शांति एवं सद्भावना शिविर कोटा राज.	२६
चिंतन भारती - ३	मातृभाषा की चेतना जागृत हो	३२
परिचय भारती -	प्रो.डी.तंकप्पन नायर	३२

संपादकीय...

इस वैचारिक अनुष्ठान को आपका सहयोग चाहिए

आज से ६५ वर्ष पूर्व साने गुरुजी द्वारा पंढरपुर सत्याग्रह के बाद विठ्ठल मंदिर में दलितों के प्रवेश की संकल्पना साकार हो पाई थी. समसामयिक परिस्थितियों में साने गुरुजी के उस सत्याग्रह से और उसके कारण उत्पन्न व्यावहारिक परिस्थितियों से यदि हमें कुछ सीख मिलती है तो वह यही कि हमें पराई पीडा को समझने की कोशिश करना चाहिए. अपने-पराये के भेदभाव को भूलकर सामाजिक न्याय व मानवाधिकारों की प्रतिष्ठावाले मानवीय समाज के अस्तित्व के लिए सदा सचेत व्यवहार करते रहें. मानवता का हित चाहनेवाले मसीहा के रूप साने गुरुजी समाज में इन्सानियत को पनपते हुए देखना चाहते थे. आदर्शमय आज़ाद भारत की संकल्पना से प्रतिबद्ध संविधान निर्माताओं की भी यही आकांक्षा थी. संविधान में दलितोद्धार के लिए जितने भी प्रावधान किए गए हैं. उनके सुफल के रूप में थोड़ा-बहुत परिवर्तन तो हुआ है. मगर वर्गरहित समतामय समाज का रूप धारण करना बडा सपना बनकर रह गया है. समाज में भेदभावों की गहराई आज भी नज़र आ रही है. इस विडंबना को खत्म करने में कई विशिष्ट समाज सेवियों के विचार किसी हद तक प्रेरक के रूप में काम आते हैं. साने गुरुजी का वैचारिक चिंतन भी इस रूप मे बड़ा प्रासंगिक है. पिछले १० मई २०१३ को गोवा में संपन्न 'पंढरपुर सत्यागृह एवं यदुनाथ थत्ते समारोह' के अवसर पर कई गण्यमान्य विद्वान व सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित थे. 'आंतर भारती' के स्वप्न द्दष्टा साने गुरुजी और यदुनाथ थत्ते जैसे मनीषियों के आदर्श चिंतन को व्यापक बनाने के पक्ष में मेरे प्रस्ताव पर सबकी सहमति थी. साने गुरुजी की एक सौ चालीस कृतियाँ मराठी में प्रकाशित हुई हैं, इन कृतियों का भारतीय भाषाओं में अनूदित होकर व्यापक प्रसार होने पर (पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों, ब्लॉगों, वेबजालों आदि के माध्यम से) अखिल भारतीय स्तर पर इनके श्रेष्ठ वैचारिक चिंतन की गरिमा बढ़ सकती है. इतना ही नहीं विश्व में इनके चिंतन की खुशबू फैल सकती है. इस कार्य में सबसे पहले मराठी से सभी कृतियो का हिंदी में प्रामाणिक अनुवाद हो जाए तो आगे हिंदी से अन्य भाषाओं में अनुवाद सरल हो पाएगा. (मराठी भाषी जो हिंदीतर किसी भी भाषा में सीधा अनुवाद कर सकते हैं, वे भी जरूर यह काम तुरंत शुरू कर सकते हैं.)

इस संकल्पना को साकार बनाने का आह्वान साने गुरुजी के समस्त प्रशंसकों को, आतर भारती संस्था के समस्त कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों तथा 'आंतर भारती' पत्रिका के समस्त लेखकों, पाठकों व हितैषियों से यही अपेक्षा की जाती है कि इस अनुष्ठान में अपना योगदान जरूर सुनिश्चित करें. इस कार्य में समन्वय की भूमिका 'आंतर भारती' पत्रिका के माध्यम से सुनिश्चित की जाएगी तथा प्रगति की सूचना भी सभी को दी जाती रहेगी. इस कार्य में योगदान देने के लिए इच्छुक उत्साही कार्यकर्ताओं, अनुवादकों, पाठकों से अनुरोध है कि वे अपने योदान-संकल्प की सूचना 'आंतर भारती' पत्रिका के प्रधान संपादक अथवा कार्यकारी संपादक को किसी भी माध्यम से (पत्र, ई-मेल, फोन, फैक्स आदि) जरूर सूचित करें. 'आंतर भारती' के अगले अंकों में इस दिशा में अपेक्षित सूचनाएँ प्रकाशित की जाएगी. बहुभाषाई भारत की कई भाषाओं के माध्यम से साने गुरुजी की वाणी को प्रसारित करने के लिए संकल्प करनेवाले समस्त कर्मठ मनीषियों का अग्रिम अभिनंदन.

जून ५ को 'विश्व पर्यावरण दिवस' की शुभकामनाओं सहित इसकी सार्थकता व प्रासंगिकता को बढ़ाने के लिए अपने अड़ोस-पड़ोस में पौधे लगाकर व लगवाकर हरितमय बनाएं और पेडों को काटने से रोकें तथा प्रदूषण को रोकने में व्यावहारिक कदम उठाएँ.

- डॉ.सी.जय शंकर बाबु

विशेष सूचना

दि. १० मई २०१३ को आंतर भारती के विश्वस्तों ने यह निर्णय लिया है कि जून २०१३ के अंक से आंतर भारती (मासिक) व आंतर भारती की आजीवन (१५ वर्ष) सदस्यता शुल्क निम्न प्रकार होगा.

आन्तर भारती आजीवन सदस्यता (१५ वर्षों के लिए)	रु. 1000-00
आन्तर भारती वार्षिक शुल्क	रु. 100-00
आन्तर भारती एक अंक का मूल्य	रु. 10-00

कृपया नोट करें.

विश्वस्त - सचिव

आंतर भारती ट्रस्ट

आंतर भारती - १

तुकाम्हणे

(मराठी)

करितों कवित्व म्हणाल हें कोणी

करितों कवित्व म्हणाल हें कोणी । नव्हे माझी वाणी पदरींची ॥ध्रु॥
माझिये युक्तीचा नव्हे हा प्रकार । मज विश्वंभर बोलवितो ॥१॥
काय मी पार जाणे अर्थभेद । वदवी गोविंद तें चि वदें ॥२॥
निमित्त मापासी बैसविलों आहें । मी तों कांहीं नव्हे स्वामिसत्ता ॥३॥
तुका म्हणे आहें पाइक चि खरा । वागवितों मुद्रा नामाची हे ॥४॥
तुका म्हणे आम्ही अवघेचि गोड । जया पुरे कोड त्याचे परी ॥५॥

हिन्दी भावानुवाद :

'मुद्रा स्वामी की मैं सैनिक हूँ'

कोई कहेगा-काव्य लिखवता हूँ, कविता लिखवता-कह लेता हूँ ।
नहीं है यह निज रचना मेरी, कविता नहीं है मेरी चेरी ॥१॥
विश्वंभर बुलवाता है मुझसे, उसके वचन निकलते मुख से ॥२॥
मैं पामर कविता क्या जानूँ, अर्थभेद रीति पहचानूँ ?
गोविंद जो बुलवाता मुझसे, वहीं बोल देता हूँ मुख से ॥३॥
माप गिनने का निमित्त हूँ मैं, गिन-गिन माप डालता हूँ मैं ।
मैं सेवक, स्वामी है वह ही, शासन-सत्ता है उसकी ही ॥४॥
तुका कहे मैं सच्चा-चाकर, उसकी आज्ञा का हूँ अनुचर ।
उसके नाम की मुद्रा लेकर, घूमा करता हूँ द्वार-घर ॥५॥

हिन्दी : प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार
परिमल २८/८१, विद्या नगर, उस्मानाबाद (महा.).

English Translation

Some say I write poetry
Karito Kavitwa mahannalhen koni

Some Say I write poetry.
But no, the words are not mine !
Neither is there any jugglery
Of words in my writings.
It is the Creator of this Universe
Who makes me speak or wite.

What do I know of the quintessence of words ?
It is Govinda[1] Who makes me speak.
I am only His instrument;
I am not the Master at all.

Says TUKA, it is good I stand at His feet
And use His signet ring! (Namadeva[2])

1. Govinda - Lord Vitthala
2. Namadeva - Perceptor of Santa Tukaram.

English : D.S.VAJRAM
3, Praram, Lakaki Rasta, Pune - 411016

आंतर भारती - २

बसव वचन

मूल कन्नड वचन -

नादप्रिय शिवनेंबरु नादप्रिय शिवमल्लय्य
वंद प्रिय शिवनेंबरु वेदप्रिय शिवनल्लय्य
नादव माडिद रावणंगे अरेयायुष्यवाथित्तु
वेदवनोदिद ब्रह्मम शिर होंयित्तु
नादप्रियनू अल्ल वेंदप्रियनू अल्ल
भक्तिप्रिय नम्म कूडल संगम देव

हिंदी काव्यानुवाद :-

कहते हैं ध्वनिप्रिय शिव, ध्वनिप्रिय शिव नहीं हैं ।
कहते हैं वेदप्रिय शिव, वेदप्रिय शिव नहीं है ।
ध्वनि प्रिय रावण को आधी आयु मिली,
वेदों के पाठक ब्रह्मा का सिर गया ।
शब्द-ध्वनि प्रिय नहीं, वेद प्रिय भी नहीं
भक्ति प्रिय हैं हमारे कूडल संगम देव ।

भाष्य -

शिव संगीत प्रिय हैं ऐसे कहा जाता है लेकन संगीत प्रिय वे नहीं हैं. कहते हैं शिव वेद प्रिय हैं लेकिन वे वेदप्रिय भी नहीं हैं. ऐसे होता तो क्या शिव के परम भक्त रावण को पूरी आयु न मिलती ? वेदों का पाठकरनेवाल ब्रह्मा का सिर जाता ? बसवेश्वर कहते हैं कि शिवसंगीत प्रिय नहीं हैं न वेद प्रिय हैं. शिव तो भक्ती प्रिय हैं. वे भक्त के निर्मल भक्ति मात्र से प्रसन्न होते हैं. वैसे भी उन्हें आशुतोष कहा जाता है.

- डॉ.इरेश सदाशिव स्वामी
- 'विद्या', १२, ब्रह्मचैतन्य नगर, बिजापूर रस्ता, सोलापुर - ४१३००४
०२१७-२३४२१९४, ०९३७१०९९५००

आन्तर भारती
शोध-बोध-प्रबोध
संकलक व संपादक : पु.वि.त्रिवेदी
आन्तर भारती के कार्यों का स्वानुभव आधारित मराठी लेखन
संग्रहणीय मूल्य रु. १८०

तिरुवल्लुवर वाणी

तिरुक्कुरल

तमिलमूल - संत तिरुवल्लुवर
देवनागरी लिप्यांतरण एवं हिंदी हाइकु अनुवाद -
डॉ.सी.जय शंकर बाबु

प्रथम खंड - अरत्तुपाल (धर्म खंड)
अध्याय ४. अरन् वलियुरूत्तल (धर्म महिमा)

चिऱप्पुईनुम् चेल्वमुम् ईनुम् अऱतिनूउङ्गु
आक्कम् एवनो उयिर्क्कु। (कुरल ३१)

मुक्ति-ऐश्वर्य
देता धर्म, कोई है
बड़ा इससे ?

भावार्थ - धर्म से आपको मोक्ष मिलता है और ऐश्वर्य भी । धर्म से बढकर क्यो कोई भी लाभदायक वस्तु है ?

अऱतिनूउङ्गु आक्कमुम् इल्लै अदनै
मऱत्तलिन् ऊङ्गिल्लै केडु । (कुरल - ३२)

श्रेष्ठतम है
धर्मः इसे भूलना
बड़ा अकर्म ।

भावार्थ - धर्म ही श्रेष्ठतम है, धर्म को भूलने से बढ़कर कोई बुराई नहीं है ।

संघर्ष और सफलता की गाथा

बराक ओबामा

- डॉ.विद्या केशव चिटको

(गतांक से आगे...)

१९९७ समर में उसे कॉलेज में पढ़ना नही था. सीनेट की बैठक का प्रथम सत्र खत्म हो जाने पर ओबामा ने इलिनॉयस के छोटे-छोटे जगहों की यात्रा की. तालुका गाव गली-गली गरीब-अमीर, छोटे-बड़े जवान-बूढ़े सबसे जाकर वह मिलता रहा. उनकी बातें सुनता रहा. उनकी क्या जरूरतें हैं, वे क्या चाहते हैं आदि. ओबामा ने इस संबंध में लिखा है कि उन वृद्ध लोगों में मुझे अपने नानाजी का खुलापन, मेरी नानी की क्रियाशीलता और मेरी माता की सहृदयता दिखाई देती थी. उसके मैं दर्शन करता था.

ओबामा जिन लोगों से मिलता उनसे वह कहता कि यदि अमेरिका को स्वतंत्र समाज के रूप में प्रगति हासिल करना है तो लोगों को स्वस्थ समुदायों के निर्माण के लिए आपस में संकीर्ण स्वार्थपरक सेवा उद्देश्यों के लिए लड़ने की जगह आपस में मिलजुलकर काम करना सीखना चाहिए. (If America is to go in progress as a free society, people must learn to work together to build healthy communities rather than fight with each other over parochical self serving interest (Page 112 Obama from promise to power)

हम एक समाज के निर्माण की बात करें न कि उनके अपने मूल्यों के आधार पर अलग-अलग परिवारों की बात.

**** **** ****

१९९९ में बराक और मिशेल के परिवार में कन्यारत्न का आगमन हुआ. उन्होंने अपनी लाडली बेटी का नाम रखा मालिया (Malia). मालिया का जिसका हवाईयन भाषा में अर्थ होता है शांत (Clam) और स्वाहिली भाषा में अर्थ होता है रानी (Queen)

**** **** ****

सन् १९९९ में संगठित रूप में उसने जो काम किया वह महत्वपूर्ण रहा. लगभग साठ बिल सिनेट में पेश किए गए जिनमें से ग्यारह को कानून की मान्यता प्राप्त हुई. यह बराक की सफलता रही. प्रगति रही. जिसे वैधता प्राप्त हुई-इनमें से

पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल

- टी.ई.एस.राघवन

अजमेर

चिश्ती सूफी संत की दर्शनीय दरगाह ।
'आनासागर' झील लखव, यात्री करते वाह ॥
अंग्रेजों के विनिर्मित, मेयो कालिज रव्यात ।
ऐतिहासिक दुर्गों में, 'तारागढ' विख्यात ॥
'फाय सागर' पिकनिक थल, पर्यटकों का केंद्र ।
पृथ्वीराज-दाहर के स्मारक प्रतिमा केंद्र ॥

पुष्कर

'माल पुआ' की मिठाई मिलती है स्वादिष्ठ ।
सावित्री-मंदिर लखने आते हैं जन धर्मिष्ठ ॥
बह्मा वराह आदि के, मंदिर विराजमान ।
दर्शित सर्कस खेल बहु, मेले के दौरान ॥
गाय, ऊँट, घोड़ा, बैल इनका है व्यापार ।
पुष्कार में प्राचीनतम चीजों की भरमार ॥

- १, हनुमंतरायन मंदिर गली,
चेन्नई - ६००००५.

हमारा ई-मेल का पता

e-mail : antarbharati.patrika@gmail.com
raavas@rediffmail.com
लेख इस ई-मेल पर भी भेजे जा सकते हैं

आंतर भारती पत्रिका के ग्राहक बने / बनाएँ

महत्वपूर्ण रहे -

राज्य के अनुदान से प्रोस्टेट कैंसर पड़ताल कार्यक्रम को लागू करना.

हृदय चिकित्सा के लिए बेहतरीन अस्पतालों को स्थापित कर प्रशिक्षण देना. नर्सिंग होम दुरुपयोग को रोककर समाप्त कर अच्छे उपशमन के लिए अनुदान देना.

ओबामा सब समय इस प्रयत्न में रहता कि किस प्रकार से वह गरीबी से लोगों को बचाये, उनके अधिकार सुरक्षित रखे, उनकी गरीबी की समस्या दूर करे और नागरिक अधिकारों की रक्षा करे.

उसके बारे में एक ने लिखा कि ओबामा बड़ा अच्छा परिणाम हासिल करेवाला रहा. वह आदर्श विधि-निर्माण में पारित होनेवाले बिलों के समर्थन में रुचि रखता था.

जान बैमन ने लिखा है कि ''वह आदर्श होने के बावजूद बड़ा व्यावहारिक है.'' बॉबी रश से उसे २००० में बुरी तरह से हार खानी पड़ी थी. वह सिनेट में अल्पसंख्यक पार्टी में रहा और डेमोक्रेट्स फिर सत्ता में आने की कोई आशा संभावना नहीं थी फिर भी उसकी घुड़दौड़ जारी रही. वह थक कर हारकर नहीं बैठा. लोगों से मिलता रहा. राजनीतिक विषयों पर चर्चा करता रहा.

सन् २००१ में उसके घर में दूसरी बेटी सशा भी आ गई थी. खर्चे भी बढ़ गए थे. यह जरूर था कि अब उसकी आर्थिक स्थिति पहले से कुछ अच्छी हो गई थी.मिशेल और वह दोनों की सम्मिलित आमदनी जो २५०००० डॉलर सालाना रही. पर उस पर कर्ज का भारी बोझ रहा. उन्होंने अपने प्रचार खर्च के लिए क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल भी किया था. साथ ही दोनों पति-पत्नी हावर्ड का छात्र ऋण भी चुका रहे थे. और निकट भविष्य में इससे अच्छी ज्यादा वेतन की नौकरी पाने की संभावना भी नहीं थी कारण वकीली करने के द्वार अब बन्द हो चुके थे.

परन्तु उसके साथियों ने २००० में लॉस एंजिल्स में डेमोक्रेटिक राष्ट्रीय अधिवेशन में उपस्थित होने के लिए, उस पर बहुत जोर दिया. वह बड़ी मुश्किल से पैसे का जुगाड़ कर पाया था. वह लॉस एंजिल्स गया पर एयरपोर्ट रेंटल कार एजेंसी द्वारा उसका क्रेडिट कार्ड रिजेक्ट कर दिया गया. उसे इन्ट्रेंस पास भी नहीं मिल पाया. उसने कुछ अधिकारियों के साथ फोन पर सम्पर्क स्थापित किया पर कोई लाभ नहीं हुआ. कन्वेंशन के अपने नियम कानून थे. वह लॉस एंजिल्स की वह उस अधिवेशन में हाजिर हुए बिना वापस लौट आया. परंतु यह एक ऐसी घटना

पृष्ठ २५ पर...

चिंतन भारती - १

(स्कूली) प्रमाण पत्र से 'जाति' हटा दी तो

-ॲड.डी.आर.शेळके (औरंगाबाद)

स्कूल के प्रमाणपत्र पर 'जाति' का उल्लेख न किया जाए, यह ॲड्.प्रकाश आंबेडकर की सूचना अवास्तव और अव्यवहारी है. भारतीय संविधान विश्वास दिलाता है सामाजिक न्याय का और इसके प्रति कटिबद्ध शासनकर्ता इस सूचना को कम से कम पचास वर्षों तक अंमल में लाने से रहे. जबतक जातिव्यवस्था और उसपर आधारित विषमता कायम है तब तक यह सूचना अमल में लाना मुश्किल है. इस सूचना का अमल शुरु हुआ. ऐसा केवल युक्तिवाद के लिए गृहित मानने से ही उसके कितने विपरीत परिणाम होंगे. देखिए जिसके स्कूल के प्रमाणपत्र पर 'जाति' नहीं है वह नौकरी, शिक्षा, सहकार चुनाव में आरक्षित पद पर या किसी भी क्षेत्र में आरक्षण निर्धारित पद पर, पिछडी जाति के आधार पर हक जता नहीं सकेगा. किसी पिछड़े जाति के व्यक्ति की आरक्षित पद पर चुनाव-नियुक्ति करनी हो तो उसे अपनी जाति सिद्ध करने प्रमाणपत्र पर दर्ज जाति. इतना ही नहीं तो उसकी पिछली दो पीढियों का अर्थात पिता-दादा का जाति प्रमाण देना आवश्यक है. नजदीकी रिश्तेदारों की जाति के प्रमाणपत्र भी देने होते हैं. न्यायालय में चुनौति के संदर्भ में भी, वहां भी ऐसे प्रमाणपत्र देन होते हैं. स्कूल के प्रमाण पत्र पर जाति का उल्लेख न हो, तो वह व्यक्ति आरक्षित पद के लिए कभी अर्जी नहीं दे सकेगा. आरक्षित पद पर हक मांगने का मार्ग बंद होगा. आरक्षण के माध्यम से मिलनेवाले लाभ से संबंधित व्यक्ति वंचित रहेगा.

संविधान में किए गए आरक्षण के प्रावधान के कारण आज़ादी के बाद हजारों दलित, अन्य पिछडों को उच्च शिक्षा, नौकरियों में अवसर मिलें. राजकीय क्षेत्र में आरक्षित पद से वे चुनकर आ सकें. इस कारण उन्हें समाज में प्रतिष्ठा मिली. उनकी आनेवाली पीढियों को भी लाभ मिलता रहेगा. आरक्षण के कारण अंशतः परिस्थिति में बदल हुआ है. लेकिन ऐसा नहीं कहा जा सकता कि आम दलित समाज का, अन्य पिछडों का उत्थान हुआ है या उनकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति बदली है. इस वर्ग को विशेषकर दलितों को प्रशासन में यथोचित

प्रातिनिधित्व मिला है. ऐसा भी नहीं कहा जा सकता. पदोन्नति के पदों पर दलितों के प्रतिनिधि एक प्रतिशत भी नहीं हैं. यह वास्तवता होते हुए भी स्कूल के प्रमाणपत्र से जाति निकाल देनी चाहिए, ऐसे विधान के द्वारा प्रकाश आंबेडकर इस समाज को आरक्षण के लाभ से क्या वंचित रखना चाहते हैं ?

यह ध्यान में लेने लायक बात है कि आरक्षण का विरोध करनेवाले, आरक्षण रद्द हो इस मांग के प्रति प्रयत्नशील व्यक्ति, संगठन आंबेडकर की सूचना का स्वागत कर रहे है. आरक्षण के विरोधियों के प्रयत्नों को सींचने जैसा ही यह प्रकार है. प्रकाश आंबेडकर कहते हैं कि स्कूल के दाखिले से जाति उल्लेख हटा देने से आरक्षण को धक्का नहीं लगेगा. इसकी पर्यायी व्यवस्था की जा सकेगी. पर्यायी व्यवस्था क्या हो, यह उन्होंने बताया नहीं. हमारी भी दृष्टि में कोई पर्यायी व्यवस्था नहीं है. जाति के दाखिले के अभाव में जिन्हें आरक्षण पर दावा नहीं करते आएगा. उन्हें खुले वर्ग में जाकर स्पर्धा करनी होगी. वहां पिछडें क्या टिक सकेंगे ? इसपर भी विचार होना चाहिए. आरक्षण, ॲट्रॉसिटी कानून आदि के कारण दलितों को कुछ प्रमाण में सुरक्षा मिली है. आरक्षण रद्द करने पर वे असहाय हो जाएंगे.

मुख्य जाति के साथ-साथ ही कई उपजातियाँ हैं. भिन्न जाति तो छोडे दीजिए. उपजाति में भी बेटी व्यवहार नहीं होते. भारतरत्न डॉ.बाबासाहब आंबेडकर ने अंतिम रूप से चेतावनी देकर भी दलित समाज के अन्दर भी ये उपजातियाँ नष्ट नहीं हुई हैं. यह वास्तवता होते हुए भी सिर्फ स्कूल के दाखिले से जाति उल्लेख मिटा देने से जाति प्रथा किस तरह नष्ट होगी ? जाति व्यवस्था को पूरी तरह मिटाने के लिए डॉ.बाबासाहब ने सुझाया हुआ अन्तरजातीय विवाहों का उपाय प्रभावी है. अन्तरजातीय विवाह हो रहे हैं लेकिन उनकी संख्या नगण्य है अन्तरजातीय विवाहितों के बच्चों के साथ पिता की जाति लगती है और वैसे कानूनी निर्णय भी हुए हैं. फिर भी अन्तरजातीय विवाहों का प्रमाण बढ़ते रहने से जाति अन्त का उद्दिष्ट प्राप्त करने का मार्ग आसान होगा, ऐसा लगता है.

(सुगावा : मार्च २०१३ के सौजन्य से)

अनुवाद : ज्योतिराव लढके, 'चेतस', २२,
बाजीप्रभुनगर, नागपुर ४४००३३

चिंतन भारती - २

सृजनकर्ताओं के पंख मत छांटिए

- अमर हबीब

स्त्री समस्या की ओर देखने के भिन्न दृष्टिकोण हैं. सनातन या पुरातन विचार स्त्री को कभी देवी तो कभी दासी मानता है. यह विचार कालबाह्य हो चुका है, नकारा जा चुका है. आधुनिक विचारों में भी काफी मतभिन्नता है. कुछ व्यक्ति, स्त्रियों का प्रश्न लैंगिक मानसिकता की उपज है, ऐसा मानते हैं. वे संघर्ष को स्त्री विरुद्ध पुरुष इस तरह चित्रित करते हैं. इस विचार की निरर्थकता ताराबाई शिंदे नामक महोदया द्वारा सौ वर्ष पहले ही स्पष्ट की गयी थी और उन्होंने जोर देकर कहा था कि स्त्री और पुरुष परस्पर पूरक हैं. 'कामों का वितरण' यह बात स्त्री समस्या के पीछे है. यह भी एक अर्वाचीन विचार था जो अभी त्याग दिया गया है. मेरी दृष्टि में समस्या 'सर्जक विरुद्ध' 'परजीवी' रूप में है और वह प्रमुखता से व्यवस्था के साथ जुडी हुई है. उत्पादकों को लूटनेवाली व्यवस्था में सृजनकर्ता के पंख छांट दिए जाते हैं. इस सूत्र के आधार पर ही स्त्री समस्या के प्रति वास्तव विचारमंथन किया जा सकता है.

प्रश्न व्यक्ति का नहीं व्यवस्था का है -

तुलसीदास जी एक दोहे में कहते हैं. 'ढोल, गंवार, पशु, नारी ये हैं ताडन के अधिकारी' अर्थात ढोल, गंवार, पशु और स्त्री ये चार घटक पिटाई के लायक हैं. उनमें ढोल और गंवार ये शब्द कलाकार और कृषकों को भी लागू होते है. अर्थात कलाकार, कृषक, पशु और स्त्रियों को नियंत्रण में रखना चाहिए. इनपर उठते-बैठते, लातों-घूसों का प्रयोग करने से वे कानून में रहते हैं. इन चार घटकों में एक विलक्षण साम्य है. ये चारों घटक सृजन के साथ सम्बद्ध हैं. कलाकार के मस्तिष्क में कल्पनाओं की उपज होती है. इस विश्व में जिसका अस्तित्व नहीं है ऐसी कल्पना को वे प्रत्यक्ष में उतारने का प्रयत्न करते हैं. कृषक एक दाने से हजार दाने पैदा करनेवाली प्रक्रिया का प्रमुख घटक होता है. पशु शावक देते हैं. स्त्री भी अपने अपत्य को जन्म देती है जिसका इस दुनिया में अस्तित्व ही नहीं होता. सर्जनशील घटकों को अंकित रखने का प्रयत्न सनातन है.

परजीवियों की समाजव्यवस्था इन चार घटकां को गुलाम बनाकर रखती आयी है. नियंत्रण, कठोर बंधन इन चार घटकों पर ही लादे जाते हैं. स्त्रियों की समस्याओं को समझ लेते समय यह भीषण वास्तवता नजरो से ओझल करने

से काम नहीं चलेगा. परजीवियों के हातों में संपूर्ण समाज व्यवस्था रहनेवाली होगी तो वह इन चारों घटकों को यंत्रणा देगी ही. महिलाओं की आज़ादी का विचार अर्थात ऐसी व्यवस्था की निर्मिती का विचार है जिसमें मुफ्तखोरों की सत्ता के लिए कोई स्थान नहीं होगा. भारत की आज़ादी की प्राप्ति के बाद किसने अच्छे दिन देखते हैं? ऐसा प्रश्न हमने अपने आप से पूछा तो हमारे आँखों के सामने राजनीतिज्ञ, शासकीय अधिकारी, बिल्डर्स, स्मगलर्स, गुंडे या दादा, गुरुडम फैलानेवाले बाबा, सरकारी कृपा का जिन्हें लाभ मिला है ऐसे संस्थाचालक इनकी ही भीड होने लगती है. ये सारे मुफ्तखोर हैं. इनमें कोई भी स्वयं उत्पादक नहीं है. ये सभी किन्हीं दूसरों के कष्टां से निर्मित सम्पत्ति पर डल्ला मारनेवाले हैं. इससे उलट भारत की आज़ादी के बाद किनके बुरे दिन आए? ऐसा प्रश्न पूछते ही आँखों के सामने उभर आता है वह चित्र जिसमें कृषक, महिलाएँ और कलाकार आंसुओं को टपकाते हुए एक कोने में खडे हैं. निश्चित ही यहाँ बात हो रही है उन घटकों की जो कुछ नई निर्मिती करनेवाले हैं. (विज्ञापनों से करोड़ो रु.कमानेवाले तथाकथित कलाकारों की नहीं-क्षमस्व-अनुवादक). बहुत अधिक कष्ट सहनेवाले हैं. ऐतिहासिक समय से लेकर तो आजतक भयंकर यातनाओं से गुजरे हैं. कृषक आत्महत्त्या कर रहे हैं. स्त्री जन्म को नकारा जा रहा है. कलाकार लाचारी का जीना जी रहे हैं. इन घटकों को चुपचाप दमन सहना पड़ रहा है. यह व्यवस्था ऐसी ही रखकर हम स्त्रियों की आज़ादी के विषय में नहीं सोच सकते. मुफ्तखोरों ने लादे हुए अमानुष नियंत्रण उखाड फेंके बिना ये घटक मुक्त नहीं हो सकेंगे. स्त्रियों की समस्या का विदारक चित्र भले ही परिवार में दिख रहा हो लेकिन उसका समाधान परिवार की पुनर्रचना में न होकर समाज की पुनर्रचना में है.

महिलाएँ सभी एक :

हाल ही में सवर्ण महिलाओं के प्रति सार्वजनिक रूप से अन्‌उद्‌गार निकाले गए. दो राजाओं की लडाइयाँ होती थीं लेकिन वहां चुसी फौज वहां की स्त्रियों पर बलात्कार करत थी. उन अभागतों का इस सारी उठापटक से कोई लेना-देना नहीं होता था. फिर भी उन्हें यातनाएँ सहनी पडती थीं. कइयों को बंदिनी बनाकर ले जाते थे. वह जिस तरह का जंगलीपन था उसी ढंग पर आज भी जाति-जाति और धर्मों-धर्मों के बीच हो रहे झगठों में स्त्रियों की आबरू लूटी जाती है. मनुस्मृति का पुरस्कार करनवालों ने स्त्रियों के प्रति अपशब्दों का उच्चार किया

तो उनसे दो-दो हात किये जा सकेंगे. लेकिन छत्रपति शिवाजी महाराज, महात्मा ज्योतिबा फुले, डॉ.बाबासाहब आंबेडकर इनका नाम लेनेवाले जब विशिष्ट जाति की महिलाओं को लक्ष्य बनाते हैं तब तलवोंसे ऊपर तक आग उठती है.

महात्मा फुले ने महिलाओं के प्रति कभी जाति-जाति में भेद नहीं किया. सभी स्त्रियों को शूद्र माना गया है यही बात वे दुनिया को बताते रहे. ब्राह्मण महिलाओं के लिए उन्होंने किये काम को सारी दुनिया जानती है. उनके एक सहयोगी ने ब्राह्मण महिलाओं के प्रति अनुद्‌गारों का उच्चारण करते ही उन्होंने अपने उस सहयोगी के साथ संबंध विच्छेद किया था. इतना ही क्यों ? 'कृषक का चाबूक' (शेतकऱ्याचा आसुड) के अध्याय में इस सहकारी ने अपनी गलती मान्य की और माफी मांगी तब कहीं जाकर फुलेजी ने उससे बंध पुनर्स्थापित किए. महात्मा फुले केवल लेखन में ही स्त्रियों की पैरवी नहीं की तो उनके सामाजिक कार्य में भी वही दृष्टि देखने को मिलती है. उनके व्यक्तिगत जीवन में भी स्त्री के प्रति गहरा सम्मान दिखाई देता है.

लिंग के आधार पर आप किसी की उपेक्षा नहीं कर सकते. समता के इस तत्व का अभी भी हमारे देश में पालन नहीं किया जाता. उसके लिए कोई भी नागरी समूह अपवाद नहीं है. सभी जाति और धर्मों के समाजों में स्त्रियों के प्रति पक्षपात किया जाता है. इस कारण कोई किसी अन्य पर दोषारोपण करने की स्थिति में नहीं है.

केवल समता पर्याप्त नहीं है -

सवर्ण पुरुष और सवर्णेतर पुरुष इनकी क्षमताओं में ही अन्तर नहीं है. जाति व्यवस्था ने सवर्णे तर समाज के लोगों से अवसर छीन लिये इस कारण 'समानता' के तत्व के आधार पर हम न्याय की मांग करते हैं. कई लोग इसी तत्व के आधार पर स्त्रियों के लिए भी हक की मांग करते हैं. लेकिन स्त्रियों के विषय में केवल इतना पर्याप्त नहीं है, यह ध्यान में लेना होगा. मनुष्य के तौर पर उसे समानता का अधिकार तो होना ही. साथ-साथ उसकी विशिष्ट क्षमताओं के लिए विशेष अवसर भी उसे मिलना चाहिए. अपत्यजनन यह उसकी सबको दिखाई देनेवाली विशेष क्षमता है. आज स्त्रियों की विशिष्ट क्षमताओं के संदर्भ में पूरी दुनिया में अनुसंधान किया जा रहा है. इसके निष्कर्ष आश्चर्यजनक है. उदाहरण के तौर पर पुरुषों की तुलना में स्त्रियों के पास अधिक शब्द भंडार

होता है. इस विशेष क्षमता को विशेष अवसर मिलना चाहिए. लेन-देन, चर्चाएँ तथा वाद-विवाद जैसे क्रियाकलापों मे शब्दों का अधिक उपोग किया जाता है. ऐसे सभी स्थानों पर, जिनके पास अधिक शब्दों का उपयोग करने की क्षमता है उन स्त्रियों को अवसर मिलने चाहिए. पुरुषों के दो हातों की शक्ति में जितना अंतर है उतना स्त्रियों के दोनों हाथो मे नहीं होता. अर्थात पुरुषों की तुलना में स्त्रियाँ अपने दोनो हातों का प्रयोग अधिक अच्छी तरह कर सकती हैं. मेकॉनिकल इंजिनिअरिंग जैसे क्षेत्र में इस क्षमता का अधिक उचित उपयोग हो सकता है. 'अष्टावधान' यह महिलाआं की असामान्य क्षमता सर्वमान्य है. एक साथ ही कई जगह ध्यान रखने की यह क्षमता कई क्षेत्रों में काम आ सकती है. चुल्हे पर रोटी है, पीछे चांवल उबल रहे हैं, बाजू में बच्चा खेल रहा है, बाहर कुछ तो आवाज हुई है, ऐसी कई जगह वह एक ही साथ ध्यान दे सकती है. पुरुष मात्र एक समय एक ही बात पर ध्यान केन्द्रित कर सकता है. हजारों सालों तक शिकार करते रहने के कारण एक ही स्थान पर लक्ष केन्द्रित करते हुए काम करने की उसे आदत सी हो गयी है. सरकारी नौकरियों में पुरुषों को अवसर और प्राधान्य दिए जाने के कारण कचहरी की खिडकियों के आगे कतारें लगनी लगीं. एक प्रकरण के बाद दूसरा प्रकरण हाथ में लेने की पद्धति उसने स्वीकार की. कचहरियों में स्त्रियों की 'अष्टावधानी' क्षमता का उपयाग किया गया होता तो काम निपटाने की गति पुरुषों की तुलना में अधिक होती. नियोजन की या कष्टों को उठाने की क्षमता स्त्रियों में अधिक होने का निष्कर्ष भी सामने आया है.

स्त्री मनुष्य है और मनुष्य के तौर पर उसे समान अधिकार तो मिलना ही चाहिए लेकिन उसकी जो विशिष्ट क्षमताएँ हैं उनके लिए भी अवसर मिलना चाहिए. स्त्रियों को हमने चारदीवारीं में बन्दी बनाकर रखा इस क्षमताओं में इस आधार पर कोई अन्तर नहीं आता कि वह महिला ब्राह्मण है या शूद्र. इसका अर्थ यही है कि सारी महिलाओं की ये क्षमताएँ, पुरुष प्रधान व्यवस्था ने कुचल डाली हैं.

आनेवाला भविष्य अगर तन्त्रज्ञान का होगा तो महिलाआं के विकास की राह कोई अवरुद्ध नहीं कर सकेगा. ऐसा होने पर, मानव जाति ने अभी तक कभी अनुभव नहीं की ऐसी महिलाओं की क्षमताओं से दुनिया परिचित होगी. इन क्षमताओं से दुनिया परिचित होगी. इन क्षमताओं के कारण मानव जाति अधिक उन्नत होगी.

अनुवाद - ज्योतिराव लढके,
चेतस, २२, बाजीप्रभुनगर, नागपुर - ४४००३३

विशेष आलेख - १

अकाल से मुकाबला

- अमर हबीब

अकाल की चर्चा शुरु होते ही विरोधी दल के नेता कहने लगते हैं, रोज़गार गारंटी योजनाओं के काम निकाले जानवरों के लिए छावनियों की व्यवस्था करें, पीने के लिए पानी के टँकर शुरु करें, कर्जो की वसूली पर रोक लगाएं, छात्रों की शैक्षणिक फीस माफ करें. सरकार कहती है, अकाल से बचने के लिए हमने इतनी राशि मंजूर की, फलाँ कार्यों को शुरु किया, इतनी छावनियों को मदद की, इतने टँकर शुरु किए, फीस माफ, कर्ज वसूली स्थगित की. हो गया! देखते ही देखते दिन बीत जाते है फिरसे अकाल, विरोधी दलवाले फिरसे वही उपाययोजनाएँ. जब से मैंने होश संभाला है, १९७२ से मैं देखते आया हूँ यही प्रथा चलती आ रही है. उसमें थोड़ा सा भी परिवर्तन नहीं. मान्सून किस काल में निश्चित रूप से आता रहा? कौने जाने? हम जब से देखते आए हैं तबसे वह अनिश्चितही बरसता! किस साल क्या होगा? कह नहीं सकते. हर साल एक विचित्र अनिश्चितताकी मानसिकता में किसान को बुआई करनी पडती है. इसे जुआ कह नहीं सकते, क्योंकि जुअे में अगर आप जीत गए तो मालामाल हो जाते हैं. यहाँ बारिश अच्छी हुई और फसल अच्छी रही तो भी मालामाल होने की संभावना बिल्ल्कुल नहीं होती. भारतीय किसान हरसाल नई मुसीबतोंसे मुकाबला करते हारता रहता है. सरकार अकाल से बचने के लिए उपाय योजनाएँ बनाती है, इसलिए कि वह केवल मात्र इस खेल में बना रहे, इसलिए नहीं कि वह इस भूलभुलैय्या से बाहर आए!

ऐसा माना जाता है कि मनुष्य ने प्राकृतिक आपदा को मात दी, वह उसकी उन्नतिका पहला कदम रहा. अकाल यह एक प्राकृतिक आपदा है अगर वह किसानपर टूट पडी तो आज भी किसान बर्बाद होता है याने उन्नतिकी पहली सीढ़ी चढ़ने की शक्ति भी उसमें शेष नहीं बचती. भूचाल या बाढ़ भी प्राकृतिक आपदाएँ हैं. ये आपदाएँ अगर टूट पड़ीं तो आमतौरपर उसका असर कमज्यादा पैमानेपर सबके जीवन पर पडता है. भारत में अकाल यह एक ऐसी प्राकृतिक आपदा है उसके नुकसान को केवलमात्र किसान को झेलना पड़ता है. अकालसे नुकसान ना किसी कलेक्टर का होता है, ना किसी चपरासीका, ना नेता का, ना व्यापारी का, ना सोसायटी के चेअरमन का. अकाल पडा और व्यापारी बर्बाद हुआ ऐसा हमने कभी नहीं सुना. अकाल पड़ा और सरकारी बाबू जेल गया ऐसा

चित्र भी हमने कभी नहीं देखा. इस प्राकृतिक आपदा में सभी सुरक्षित होते हैं, परंतु पीसा जाता है तो केवल अकेला किसान समाज. अकाल की आपदा टूट पड़ी, आप किसान है, इसमें पिसना आपकी किस्मत में बदा है. आप मराठा हैं इसलिए कोई राज्यकर्ता आपको बचा नहीं सकता. आप दलित हैं इसलिए कोई भी वैधानिक सुरक्षा आपको बचा नहीं सकती. खेतीपर ही जिनकी जीविका निर्भर है, खेती की उन्नति और अधोगति पर ही उनकी जिन्दगी डोलती है. वे सभी किसान अकाल के चंगुल में निश्चित रूप से फँसे हुए हैं.

अकाल की पहली चोट लगती है गूँगे जानवरों को. घास महँगी हो जाती है. पानी का अकाल पड़ा तो जानवरों को संभालना कठिन होता है. जानवरों को बेच देने के अलावा कोई विकल्प नही बचता. ऐसी स्थिति में कसाइयों को अवसरमिलता है. अकाल जानवरों के लिए जानलेवा आपदा साबित होती है. दूसरी चोट लगती है किसान महिलाओं को. घर और खेती के काम करना तो उनकी घुट्टी में होता है. अब घर खेती के काम के साथ रोज़गार की योजनाओं के भी काम करने पड़ते हैं. अकाल के समय में स्थलांतरण करना पड़ा तो महिलाओंकी समस्याओं की सीमा ही नहीं होती. तीसरी चोट बूढ़ों को होती है. किसान परिवार के बहुतही बूढ़े, कमजोर लोगों को पहले से ही बहुत काम करने पड़ते हैं. परंतु अकाल को बूढ़ेपन पर भी दया नहीं आती. अकाल में एक कामपर सत्तर की आयु को पार की हुई बूढ़ी महिला को मैने काम करते हुए देखा. जब उसे मैंने पूछा तो उसने कहा 'घर के सारे आदमी काम पर जाते हैं, नन्ही पोती भी काम पर जाती है, तो फिर मुझे ही निठल्ले बैठकर खाते रहना ठीक नहीं लगता.' एक तिनका भी टूटा. तो झोपडी गिर पडेगी ऐसी इस गृहस्थी की हालत है. वहाँ बूढ़ों को भी इसकी सावधानी बरतनी पड़ती है. सुध-बुध खोकर उन्हें अपना पसीना बहाना पड़ता है.

खेतीक्षेत्र के बाहर रहनेवाल लगभग सभी को येन केन प्रकारेण अकाल से लाभ होता है. उसमें भी सबसे ज्यादा लाभको शासन तंत्र कपट से छीन लेता है. 'युद्ध स्तर' पर मुकाबला करे इस प्रकार के आदेश की सहूलियत मिलते ही, बजेट आते ही काम शुरु होता है और बहती गंगा में सरकारी अफसर बड़े परिश्रमसे कृतकृत्य हो जाते हैं. अपना शासनतंत्र कैसा है इसे कहने की तो आवश्यकता ही नहीं. विश्वव्यापी स्तरपर सबसे भ्रष्ट प्रशासन की सूची में पहले दस में हमारी नौकरशाही आती है. अकाल निवारण की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी इस नौकरशाहीपर सौंपी जाती है. अनेक अफसर अपने कार्यक्षेत्र में काम निकले इसलिए अपने

हाथ-पाँव मारते रहते हैं, काम के लिए नहीं बल्कि मिलने वाले रिश्वत के लिए. योजनाओं की कार्यान्विती हो या अनुदान हो जरुरतमंदों के हाथ में कम परंतु मध्यस्थों की जेब पूरी भरती है. अनेक सरकारी अफसरों के बंगलां को 'अकाल कृपा' नाम दें तो उचित ही होगा. नेताओं के लिए भी यह सुवर्णकाल होता है इसे तो सभी जानते ही हैं.

विषय यह है कि अकाल जैसे प्राकृतिक आपदा का मुकाबला करने की शक्ति किसानों में क्यों नहीं रही? खेती व्यवसाय को हमेशा नुकसान में रखनेसे आपदा के सम्मुख वह टूट जाता है. इसलिए पहला उपाय यह है कि इस व्यवसाय को नुकसान में ना रखे हरसाल थोडे पैसों की बचत हो ऐसे उत्पन्न की व्यवस्था क्यों नही करने आती? करने तो आती हैं परंतु करते नहीं. किसानों के पास थोड़े पेसे जमा हुएतो वे हमारी इज्जत नहीं करेंगे. इस बात का डर नेताओंको लगा रहता है. किसान जरुरतमंद रहेगा तो ही हमारी इज्जत करेगा इसलिए उसे हमेशा के लिए जरुरतमंद रखा जाता है. जबतक खेती व्यवसाय नुकसान में रहेगा तबतक सरकार से मदद की आवश्यकता रहेगी तबतक नेता तथा अफसरों की अकाल में पाँचो उँगलियाँ घी में होंगी.

१९८६ के अकाल में घूमते हुए एक गाँव में मैंने देखा कि किसान कुओं को खोदने का काम कर रहे थे. बहुत से मजदूर वहाँ काम कर रहे थे. मैंने एक से पूछा, 'किस योजना के अंतर्गत यह कुआँ लिया?' तब उसने कहा 'हम अपने पैसोंसे इन कुओं को खोदने का काम कर रहे हैं.' मुझे अचरज हुआ . किसानोंने कहा, 'पिछले वर्ष हमने मिर्ची की फसल ली थी. उससे हमें काफी पैसा मिला.' इससाल अकाल पड़ा है. अगर मजदूरों को काम नहीं दिया गया तो वे यहाँ से निकल जाएँगे बाद में नहीं मिलेंगे. हमे कुओं की आवश्यकता थी, मजूरोंको काम की आवश्यकता थी. इसलिए हमने यह काम शुरु किया. कुएँ भी बनेंगे और मजदूर भी यहाँ टिके रहेंगे. इससे यह बात ध्यान में आई कि अगर किसान के पास पैसा हो तो वह खुद अकाल का मुकाबला कर सकता है. सरकारने दाम कम करके किसानों के दोनों हाथ काट दिए. अब वह अकाल से मुकाबला कैसे करेगा?

मराठी -
अमर हबीब
अंबर हाऊसिंग सोसायटी, अंबाजोगाई.

* हिंदी अनुवाद
डॉ.विजया वारद - रागा
नांदेड बिदर रोड, उदगीर.

वाचन समृद्धि - एक सफल उपक्रम

- श्रीमती दुर्वा गणपत साळगावकर, मोचेमाड

दकश्राव्य साधनों का आविष्कार होने के बाद धीरे-धीरे पुस्तकों को पढ़ने की रुचि कम होती गई है. लेकिन पढ़ने से मन समृद्ध बनता है. पाठक और लेखक का संबंध घनिष्ट बनता है. लेखक पाठकसे बातें कर रहा है ऐसा पाठक महसूस करता है. इसीलिए मैंने 'वाचन समृद्धि' पर काम करना निश्चित किया.

अप्रैल २०११ में प्रधानाध्यापिका के रूप में मोचेमाड विद्यालय में मेरी नियुक्ति हुई. तीन अध्यापकों का विद्यालय १ ली से ७ वीं कक्षाओं में कुल ६७ विद्यार्थी. पर्वतों की गोद में बसा हुआ गाँव और पश्चिम की ओर अथाह समुद्र, प्रकृति की सुंदरता से सजा हुआ मोचेमाड गाँव. मुझे दिल से पसंद आया. नई उम्मीद से इस विद्यालय में काम करने का अवसर मुझे मिला. इसे मैं जान गई. मैंने छात्रों का निरीक्षण किया. श्रवण, संभाषण, पठन इनका विकास करना आवश्यक है, यह बात मेरे ध्यान में आ गई. मैंने एक योजना बताई छात्रों को प्रोत्साहित किया. जून से नियोजन किया.

एक कक्षा के कमरे में पुस्तकें - जो अच्छी हालत में नहीं ऐसा सामान था. उसे ठीक से लगाकर कक्षा का कमरा खाली किया और साफ-सुथरा बना दिया. बाकी के बेंच, डेस्क वहीं पर रखवे. फलक पर 'ग्रंथालय' यह बड़े अक्षरों में लिखवा. सभी शिक्षा अभियानों की ओर से चार ट्रंक्स मिले थें. उनमें पुस्तकें और सूची डालकर छात्रों के पास दी. विद्यालय का मंत्रीमंडल नियुक्त करते समय 'ग्रंथालय का मंत्री' इस प्रकार का नया पद निर्माण किया. मिनीमंच प्रमुखकी नियुक्ति की गई. दो सहायकों की नियुक्ति की. १. विद्यालय में सभी शिक्षा अभियान की ओर से प्राप्त हुई पुरस्तकें २. किशोर अंक ३. नंदादीप योजना के बाल ग्रंथालय की और ४. मिनी मंच की पुस्तकें. इस प्रकार स्वतंत्र विभाग बनाकर छात्रोंको इसकी जिम्मेदारी दी. लेन देन रजिस्टर रखवा गया. रजिस्टर में हर छात्र के लिए पन्ने रखव दिये गये. हर विभाग का एक मंत्री और सप्ताह का एक दिन हरेक को बाँटकर दिया. उदाहरण के रूप में नंदादीप योजना सोमवार. सोमवार के दिन उस छात्र के पास जाकर विद्यालय के छूटन के बाद पुस्तकों

का लेन देन करना, और पुस्तक घर ले जाकर उसे पढ़कर सारांश लिखवना. इस प्रकार नित्यक्रम बनाया. ये चारों छात्र सोमवार मंगलवार, बुधवार, शनिवार पुस्तकें लेकर खड़े रहने लगे. पुस्तकों की लेन देन होने लगी. पुस्तकें घर जाने लगीं. सारांश लेखवन को जाँच कर लेने लगे.

विद्यालय में मिनी लाऊडस्पीकर लिया गया. परिपाठ के सय कहानी, पुस्तक के अंश पर चर्चा करना इस प्रकार छात्रों से कहा गया. पुस्तकों में जैसे छात्र होते हैं वैसे निश्च्छल मराठी छात्र आत्मसात करने लगे. पढ़े हुए विचारों को अभिव्यक्त करने का सुअवसर प्राप्त होने के कारण छात्रों को बहुत ही खुशी होने लगी. किशोर खंड और किशोर अंक बिल्कुलही नई पुस्तके अलमारी के ताले में कैद थीं. उन्हें मुक्त किया गया. किशोर अंक की अनेक कहानियों को, कविताओं को आकर्षक चित्रों को सभी छात्र बड़े चाव से पढ़ने लेगें. छात्र प्रश्न करने लगे कि बाई किशोर अंक कहाँ खरीद सकते हैं? पुस्तकें पढ़-पढ़ कर पुरानी होने लगीं. अगर छात्रों पर जिम्मेदारी डाली गई तो वे बहुतही सावधानीसे, लगन से काम करते हैं. किसने कौनसी पुस्तक अभी तक वापिस दी नहीं ? इसका जायज़ा लेते समय पुस्तकों के नाम? उस में क्या है? उसे किसने लिखवा है ? इस संदर्भ में छात्रों को चर्चा करते हुए देखवा, बहुत संतोष हुआ.

हर दिन दोपहर भोजन के बाद विद्यालय शुरु होने के पूर्व, विद्यालय छूटने के बाद विद्यालय में पुस्तकें पढने की, ग्रंथालय मंत्री अपने अपने स्टॉलपर खडे होने लगे अपनी पसंद की पुस्तक लेकर दालान के साफ-सुधरे वातावरण में बैठकर मुक्त होकर पुस्तक का पठन करना, उस समय पुस्तक अपने नाम पर न लेकर वहीं पर पढकर जिस स्टॉल से लिया था उसी स्टॉलपर वापिस करना इस तरह का नित्यकर्म शुरु हुआ.

इस समय सभी छात्रों को वहाँ जाने की उत्सुकता हो इसलिए एक नया उपक्रम सुझाया. सभी शिक्षा अभियान की तरफ से अच्छे फलक मिले थे. उनमें से दो फलक ग्रंथालय में रख दिये.

छात्र जब पुस्तक पढेंगे तब उसमें से पसंद आया हुआ विचार, कहानी का नाम, लेखक का नाम और अपना नाम फलक पर लिखवेंगें इस प्रकार निश्चित किया गया. फलकपर अपना नाम दिखेगा इसलिए छात्रों के उत्साह का ठिकाना ना रहा.

फलक पर जो मिली हुई जगह है उस पर छात्र अपने पसंद के विचार को लिखने लगे. परिपाठ में जिन्होंने अपने विचार लिखे उन्हें शाबाशी मिलने लगी. इसलिए विद्यालय छूटने के बाद फलक पर जो लिखा है उसे पढ़कर किसने लिखा है? इसे ध्यान में रखने का काम मुझे मिला. परिपाठ होने के बाद रोज़ फलक को साफ करके रखा जाने लगा. पूरे दिनभर में ये फलक भर जाने लगें. पढ़े हुए विचारों को छात्रों ने ग्रहण किया, उन्हें याद रखा. फिर फलकपर अपने विचारों को प्रस्तुत किया. अपना नाम पाठक के रूप में फलक पर आता है. वह आने के लिए और पुस्तक को विवेक बुद्धिसे पढ़ने की होड़ लगी.

'वाचन समृद्धि' यह उपक्रम सफल हुआ है, उसी के साथ सभा में निडरता से बोलना, लेखन कुशलता, चर्चा, आदान-प्रदान, दोस्ती, विवेक, समझौता, समझदारी और जिम्मेदारी का एहसास इस प्रकार के अनेक गुणों का विकास हो रहा है. क्योंकि पढ़ने का शौक छात्रों को हो गया है, इसे सँभालनेका काम हमारा होता है. (इस समय ३000/- की पुस्तकें अभिभावकोंने विद्यालय को दी हैं. यह काम जिम्मेदारी से, खिलाड़ी वृत्तिसे संपन्न कर लिया तो ये छोटे, आसमान के तारे तोडकर ना लाये तो आश्चर्य !)

हिन्दी अनुवाद - डॉ.विजय वारद रागा, उदगीर, मो. ९८९०२९८९१५

पृष्ठ १३ से...

घटी जिससे ओबामा को बहुत बड़ी सीख मिली. उसने इस घटना के द्वारा पैसे की कीमत जानी वह तो पैसे पाकेटमें रहने पर सभी पर खुले हाथों खर्च करता था. पैसा बचाना संभालकर, सोच विचार कर खर्च करना उसने सीखा ही नहीं था. शोमोन ने लिखा है. वह सरकारी कार्य पर जाने से खर्च की प्रतिपूर्ति मानना भी भूल जाता था.

सन् २००२ के चुनाव में एलिनॉय में डेमोक्रेटिक्स सेनेट की जगह पा सकने के आसार बराक को नजर आने लगे. नवम्बर के चुनाव में वह स्थिति साकार हो पाई. जोन्स सेनेट के अध्यक्ष बन गए तथा विधायक के रूप मे ओबामा के पेशे की अच्छी वृद्धि हुई, अल्पसंख्यक की बर्बर स्थिति बदलकर बहुसंख्यक होने की आशा बढ़ने लगी.

अब २००४ की सेनेट की होड़ के लिए ओबामा पूरी तैयारी के साथ आगे बढ़ा. डेमोक्रेटिक रिपब्लिकन का पीटर फिजेराल्ड उम्मीदवार रहा.

- क्रमशः

समाचार भारती -२

अंतर्राष्ट्रीय युवा शांति एवं सद्भावना शिविर कोटा राज.

दि. २२-०४-२०१३ से २८-०४-२०१३

इस शिविर का आयोजन कोटा में निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया गया -

* कोटा भारत का लघु स्वरुप है क्योंकि कोटा में सम्पूर्ण भारत से विद्यार्थी अपनी IIT, PMT, CPMT, AIEEE, JEE आदि परीक्षाओं की तैयारी के लिए आते है अतः उन्हें सम्पूर्ण भारत का दर्शन कराना.

* कोटा की जनता व यहाँ के विद्यार्थियों को सम्पूर्ण भारत की सम्पन्न सभ्यता और संस्कृति का परिचय कराना.

* युवाओं में श्रम के प्रति आस्था जागृत करना.

* गाँधी जी के सत्य, अहिंसा, प्रेम व सद्भाव के संदेश को फैलाना.

* अंतर्राष्ट्रीय शांति व सद्भावना का संदेश युवाओं के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व में व राष्ट्र में प्रसारित करना.

* युवाओं में शांति, सद्भावना, प्रेम, सहयोग, सहानुभूति, स्वानुशासन, आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, राष्ट्रप्रेम आदि की भावना का विकास करना.

* युवाओं को उनकी राष्ट्र के प्रति भूमिका व उनके उत्तरदायित्वों व कर्त्तव्यों का ज्ञान कराना.

* युवाओं में सभी धर्मों के प्रति समभाव, प्रेम व समानता का भाव जागृत करना.

* युवाओं में नेतृत्व के गुणों का विकास करना.

* युवा शक्ति के लिए, बिना किसी धर्म, जाति, लिंग, भाषा, राजनीति के, मंच प्रदान करना.

* युवाओं में समाज सेवा की भावना का विकास करना.

* युवाओं में वर्तमान परिस्थितिओं का सामना करने की शक्ति विकसित करना.

* युवाओं मे सृजनात्मकता का विकास करना.

अंतरराष्ट्रीय युवा शांति एवं सद्भावना शिविर के उद्घाटन २२/४ के दिन तक दो देश व भारत के १९ राज्यों के २८८ शिविरार्थियों का आगमन हुआ. जिनका विवरण इस प्रकार से है -

*आन्ध्रप्रदेश	१५	*केरल	१४	*सिक्किम	०७
*बिहार	११	*मध्यप्रदेश	०६	*त्रिपुरा	१०
*छत्तीसगढ़	१८	*महाराष्ट्र	०८	*उत्तरप्रदेश	०१
*दिल्ली	११	*मणिपुर	०८	*पश्चिम बंगाल	२५
*गुजरात	२४	*ओडिसा	२७	*राजस्थान	६०
*हरियाणा	०५	*पंजाब	१०	*नेपाल	१८
*कर्नाटक	०१	*पुद्दुचेरी	०४	*बंगलादेश	०५

कुल - २८८ शिविरार्थी एवं ५२ से भी अधिक सहयोगी व कर्मचारीगण उपस्थित रहे.

डॉ.एस.एन.सुब्बाराव जी कि उपस्थिति में शिविर का उद्घाटन २२/४ के दिन ५.०० बजे शिक्षा के क्षेत्र के मनीषी राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय के उपकुलपति आर.पी.यादव व कोटा विश्वविद्यालय के उप कुलपति प्रो.मधुसूदन की उपस्थित में हुआ. इस अवसर पर भाई जी ने कहा कि - ''अगर मन में शांति बनी रहे तो झगडें होंगे ही नहीं और देश दुनिया व समाज में हर तरफ शांति रहेगी. आज हर तरफ शांति की खोज की जा रही है. विज्ञान ने भले ही तरक्की कर ली हो, लेकिन किसी वैज्ञानिक ने ऐसा कोई इंजेक्शन नही बनाया जिससे बेईमान व्यक्ति को ईमानदार बनाया जा सके. अच्छा इंसान बनना है तो हमें अध्यात्म की ओर अग्रसर होना होगा. अध्यात्म ही दूसरों के लिये जीना सिखाता है. हमें सोचना होगा जब मुल्क में एक भी इंसान भूखा है तो हम जिम्मेदार हैं देश में आज भी करोड़ों लोगों को भूखा सोना पड़ रहा है. इसीलिए शिविर में दूसरों के लिए जीना सिखाया जायेगा.

मुख्य अतिथि कोटा विश्वविद्यालय के उप कुलपति प्रो.मधुसूदन शर्मा ने कहा कि यहाँ देश के कोने-२ युवा आये है युवाओं को समर्पण भाव से देश के प्रति काम करके ही देश को आगे बढ़ाना होगा. हर युवा को पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता को ध्यान में रखते हुये समाज व देश में जागरुकता फैलानी चाहिए. राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय के उप कुलपति आर.पी.यादव ने कहा- युवाओं के हाथों में ही देश की बागडोर है. ये भटके तो देश भटक सकता है और ये बढ़े तो देश बढ़ता है. हमें कोई काम ऐसा नहीं करना चाहिए जो देश की साख खराब करें.

उद्घाटन समारोह के पश्चात राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय के उप कुलपति

आर.पी.यादव जी ने शिविर के लिए अपने विचार इस प्रकार से प्रकट किए -

"The experience of participating in the camp is unforgettable and and I will cherish it forever."

कोटा विश्व विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रो.मधुसूदन शर्मा ने कहा -

"Excellent National Programme giving a great message of harmony and peace. My best wishes for the success of the camp."

दि. २३/४/२०१३

शिविर के द्वितीय दिवस की शुरुआत सुबह ४.५५ पर युवा गीत - नौजवान आओ रे नौजवान गाओ रे के साथ हुई. व्यायाम के बाद ६.३० ध्वजारोहण आदरणीय भाईजी के द्वारा किया गया. जिसमें भाईजी ने भारतीय तिरंगे, नेपाल और बांगलादेश से आये युवाओं को अपने देशों के राष्ट्रीय ध्वज का इतिहास व महत्व बताया.

७.०० से ८.३० बजे तक युवाओं ने श्रम के महत्व को जाना

शिविर मे आए युवाओं ने भाईजी व यज्ञ दत्त हाड़ा के निर्देशन में शिविर स्थल के नजदीक फोरेस्ट लैंड पर वन विभाग के सहयोग से साफ सफाई की, और श्रम के महत्व को जाना. ये युवा यहां २८ तारीख तक वृक्षारोपण के लिए ४०० से अधिक गड्ढे तैयार करेंगें जहाँ वन विभाग के स्थानीय फोरेस्टर श्री जी.पी.गौत्तम की देखरेख में एन.वाई.पी. के स्थानीय सदस्य, स्काउट गाइड, एन.एस.एस., एन.सी.सी. के सदस्य युवा वाटिका के रुप में वर्षा ऋतु में पौधे लगाएंगे इसी प्रकार यू.आई.टी. के सहयोग से शांतिनगर कच्ची बस्ती निवासियों को कीचड़ से मुक्ति के लिए रोड़ बनाने की शुरुआत की गई जिसे भी २८ अप्रैल तक पूरा किया जाऐगा.

रक्तदान :

प्रातः १०.३० से १२.३० बजे तक एन.वाई.पी.के स्थानीय सदस्यों के प्रयास से थैलिसिमिया पीडित बच्चों के लिए राजकीय ब्लड बँक के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें १९ राज्यों व दो राष्ट्रों ने मिलकर कोटा की जनता के लिए ४३ यूनिट रक्तदान किया इसमें कई युवा ऐसे थे जिंहोने अपने जीवन में पहली बार रक्तदान किया. जिसमें नेपाल से आएं १५ सदस्यीय दल के आठ युवाओं ने सर्वाधिक ८ यूनिट रक्तदान किया. डॉ.जसबीर शर्मा व उनके दल ने रक्तदान का महत्व बताया. भाई जी ने उपस्थित रहकर प्रत्येक युवा

रक्तदाता का उत्साहवर्धन किया.

नेत्रदान :

शाइन इण्डिया फाउण्डेशन के अध्यक्ष डॉ.कुलवंत गौड़ ने नेत्रदान के महत्व की जानकारी देते हुये बताया की एक व्यक्ति के नेत्रदान से ८ व्यक्ति तक लाभान्वित हो सकते हैं अपने इस अवसर पर नेत्रदान की प्रदर्शनी लगाई. इस अवसर पर सुब्बाराव जी ने भी नेत्रदान का संकल्प पत्र भरा.

२.३० से ४.०० बजे तक भाई जी ने शिविरार्थियों के साथ शिविर के नियमों के विषय में विचारविमर्श किया.

शाम को ६.०० से ८.३० तक विज्ञान नगर के राजीव प्लाजा में सर्वधर्म व सांस्कृतिक कार्यक्रम में लघु भारत का दर्शन हुआ. हरमीत मेडिकल से रैली प्रारंभ हुई युवाओं ने 'कोटा हो या गोहाटी, अपना देश अपनी माटी', 'भिन्न भाषा भिन्न वेश, भारत अपना एक देश,' 'मतदाता बनो मतदान करो' आदि नारे लगाते हुए युवा विज्ञान नगर के राजीव प्लाजा पहुँचे. यहाँ सुब्बाराव जी ने कहा कि पूरे भारत के कोने कोने, नेपाल और बांग्लादेश से आए युवा कोटा और भारत को संदेश देने आए हैं कि मिल जुलकर, शांति से रहो. सुब्बराव ने कहा कि झगड़े से राष्ट्र टूटता है. विश्व में १४५०० से अधिक लड़ाइयां लड़ी गईं. उन सबका कारण मनुष्य की ईर्ष्या और स्वार्थ है. इसलिए पूरे विश्व को चाहिए कि लड़ाई झगड़े से दूर रहकर विश्व को शांति की ओर ले जाएं. डॉ.सुब्बाराव ने विश्व के सभी ११ धर्मों की प्रार्थना कराते हुए उपस्थित लोगों को विश्व शांति, सद्भावना, अहिंसा, प्रेम और सहयोग का संदेश दिया व धर्मों का महत्व समझाया. साथ ही कहा सभी धर्मों के साथ ही विश्व शांति और एकता को कायम रखवा जा सकता है.

इससे पूर्व शिविरार्थी डा.सुब्बराव के नेतृत्व में रैली के रूप में बसों से सर्वोदय एजूकेशनल कैंपस से विज्ञान फ्लाई ओवर पहुंचे. जहां शिविर प्रार्थना समति की अध्यक्ष पूर्व विधायक श्रीमती पूनम गोयल, पार्षद ईश्वर गंभीर, राघा सचदेवा, जिग्नेश शाह, महिपाल सिंह व स्थानीय गणमान्य नागरिक एवं आयोजन समिति की ओर से शिविरार्थियों का भव्य स्वागत किया गया. सर्वधर्म प्रार्थना के बाद कैम्प में आएं शिविरार्थियों ने अपने राज्यों के लोकगीतों पर नृत्य की प्रस्तुतियां देकर उपस्थित दर्शकों का मन मोह लिया. सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में सबसे पहले पंजाब से आएं युवाओं ने भांगडे की प्रस्तुति दी तो इसके बाद नेपाल से आएं युवा ने 'उडकेली' नृत्य के द्वारा नेपाली धरती से अपने प्यार को बताया.

इसके बाद आंध्र प्रदेश पश्चिम बंगाल ने रवीन्द्र नृत्य, केरल और उड़ीसा के युवाओं ने अपनी प्रस्तुतियां देकर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया.

दि. २४/०४/२०१३

इन युवाओं को बडगांव के स्थित आगमगढ़ गुरुद्वारे के दर्शन कराए गए. जहां युवाओ ने गुरु ग्रंथ साहिब के आगे मत्था टेका. पंजाब से आएं युवाओं ने गुरुद्वारे की खूब तारीफ की तो गुरुद्वारे के सिक्ख गुरु बाबा लक्खा सिंह को जब पता चला कि पूरे देश से युवा शांति एवं सद्भावना का संदेश लेकर आए और इनका दल गुरुद्वारे भी आया है तो वे बड़े प्रसन्न हुए और इन्होंने युवाओं से बाबा का लंगर चखने का आग्रह किया. जिसे युवाओं ने सहर्ष स्वीकार कर लंगर चखा. लौटनेपर युवाओं को कोटा बेराज भी दिखाया गया. जिसके बारे में बिहार के युवाओं का कहना था कि यह डेम कोटा की लाईफ लाईन है और इसकी मरम्मरत समय समय पर की जानीचाहिए. कोटा दर्शन के बाद युवाओं का दल शिविर स्थल पहुंचा. कोटा दर्शन के दौरान युवाओं ने भारत जोड़ो के संदेश को भी लोगां तक पहुंचाया. जब युवा नारे लगाते तो लोग बड़े आश्चर्य से इन्हें देखने लगते और नारे सुन उसे समझने की कोशिश करते. युवाओं का कहना है कि तीन दिनों में ऐसा लगने लगा मानों कोटा इनके दिल में रच बस गया हो.

दि.२५/०४/२०१३

अपनी दैनिक दिनचर्या के पश्चात् ६.३० ध्वजारोहण हेतु शिविर के चतुर्थ दिवस पर लाल बहादुर शास्त्री शिक्षा समूह के निदेशक डॉ.कुलदीप माथुर पधारे इन्होंने युवाओं को राष्ट्र हित में कार्य करने हेतु संदेश दिया और युवाओं का कोटा की धरती पर स्वागत किया.

श्रमसंस्कार के पश्चात भाषाओं का ज्ञान दिया गया.

अटके मगर भाषाएं सीखने का जूनुन

१०.३० से १२.३० शिविर में आएं अलग अलग राज्यों के युवा अपनी अपनी भाषा को सिखवाते हुए दिखें. सभी बड़े मन से दूसरी भाषाएं सीख रहे थे. कोई अटक अटक कर बोलने का प्रयास करता तो भाषा सिखा रहे युवा टीचर उससे फिर से दोहराने को कहते और फिर वह युवा उसे दोहराता. इसी दौरान युवाओं ने अपने अंदर छिपे टेलेंट से युवाओं को सिखवाया.

२.३० से ४.०० बजे तक भाई जी का शिविरार्थियों के साथ विचारविमर्श सत्र चला.

गुमानपुरा में सर्वधर्म प्रार्थना सभा व लोक नृत्यों में झलकी भारत की एकता

''गणपति बप्पा मोरिया आया देखवो, आया बप्पा मोरिया नांचू मैं'', गीत पर वेस्टन गरबा करते गुजराती युवा तो ''हाए रे सरगुजा नाचे'' लोकगीत पर लोकनृत्य करते छत्तीसगढ के युवा. शिविर के चौथे दिन गुमानपुरा में सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया था. जिसमें देशभर के विभिन्न प्रांतों से आए युवाओं ने अपने राज्यों की संस्कृति से कोटावासियों का परिचय कराया. जैसे ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां शुरु हुई जिसने भी देखा वह एक पल के लिए वहीं रूक गया. मंच पर एक के बाद एक सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियों ने ऐसा समां बांधा जैसे की संपूर्ण भारत की संस्कृति कोटा की धरती पर उतर आई हो. कार्यक्रम में उडीसा से आए आदिवासी युवाओं ने सुप्रसिद्ध गायक ए.आर.रहमान के गाए गीत ''मां तुझे सलाम'' गीत पर शानदार प्रस्तुति देकर कार्यक्रम में उपस्थित लोगों का दिल जीत लिया तो नेपाल से आए युवा ने ''गांव में देखनु, गलियारे में दखनु'' गीत पर प्रस्तुति देकर खूब तालियां बटोरीं. इसके बाद पश्चिम बंगाल से आए युवाओं के दल ने एक बार फिर गणेश वंदना से मुंबई की याद को ताजा किया और भारतीय एकता का परिचय दिया.

इससे पूर्व सर्वधर्म प्रार्थना सभा में डा.एस.एन.सुब्बाराव ने उपस्थित लोगों से कहा अच्छा राष्ट्र वही है जहां डंडे का जोर नही चलें. सब नागरिक अपने कर्तव्यों को समझें.

उन्होंने डाकूओं के आत्मसमर्पण से जुडें एक प्रसंग को सुनाते हुए कहा कि डाकुओं का जब आत्मसमर्पण कराया तो डाकुओं का कहना था कि हम तो बदल जाएंगे पर जो सफेदपोश डाकू है उनका क्या. उन्हें कैसे बदलेंगे उनके पास तो लूटने का लाईसेंस है और वह तो दिल्ली में बैठकर देश को लूट रहे. इस पर सुब्बराव ने कहा कि भारत ही ऐसा राष्ट्र है, जिसने विश्व को क्रांति का मतलब समझाया कि मारना क्रांति नहीं मूल्य परिवर्तन करना क्रांति है. कार्यक्रम के सम्मानित अतिथि ए.डी.एम. राकेश जायसवाल ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि युवाओं का चारित्रिक निर्माण होना चाहिए. हम मजबूत बनेंगे तो ही समाज और राष्ट्र मजबूत बनेगा. इसलिए जरुरत है कि नैतिक मूल्यों में गिरावट नहीं हो.

कार्यक्रम के अंत में भारत की संतान नाटिका का मंचन किया गया. जिसमें सभी १८ भाषाओं के सामने युवाओं ने मोमबत्ती जला भाषायी एकता का परिचय दिया.

(चित्र मुखपृष्ठ पर देखें)

(शेष अगले अंक में)

चिंतन भारती-३

मातृभाषा की चेतना जागृत हो

किसी देश की भाषा उसके व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति है. उसको प्रतिष्ठा न देकर परायी भाषा को प्रतिष्ठा प्रदान करके उसे पराधीन बनाया जाता है. संसार के सभी स्वतंत्र देश अपना अपना कामकाज अपनी भाषाओं में करते हैं और अपनी भाषा उपयोग करना राष्ट्रीय स्वाभिान की माँग है. किन्तु स्थिति आज यह है कि सभी राज्यों में शासकीय तथा निजी विद्यालयों में प्रारंभिक स्तर से अंग्रेजी रटायी जा रही है. अंग्रेजी भाषत्त बच्चों के मन और मस्तिष्क पर बोझ बनकर उनकी सहजता पर आघात पहुँचाती है. यह परायी भाषा बच्चों को उनकी जड़ों से भी अलग करती है. मातृभाषा की संवेदनशीलता को महत्व नहीं देने के कारण शिक्षा का उद्देश्य सफल नहीं हो पाता. मातृभाषा में अध्ययन होने से ही, बच्चों की कल्पना एवं विचारशक्ति जागृत होगी. देश की अखण्डता को बनाये रखने के लिए संपूर्ण देश में केन्द्र की राजभाषा के रूप में हिन्दी स्वीकृत होनी चाहिए और साथ-साथ सभी भारतीय भाषाओं को अपने-अपने राज्यों में राजभाषा होने, शिक्षा माध्यम बनने एवं सरकारी कामकाज में पूरी तरह प्रयोग किये जाने का गौरव प्राप्त होना चाहिए. इसी में इस देश की अखण्डता और भावात्मक एकता के बीज विद्यमान हैं. हमें देश में मातृभाषा की चेतना जागृत करनी चाहिए. तभी हिन्दी को राष्ट्रभाषा की प्रतिष्ठा भी मिलेगी. **प्रो.डी.तंकप्पन नायर**

परिचय - भारती

प्रो.डी.तंकप्पन नायर

अनुवाद के क्षेत्र में समग्र सेवाओं तथा भारतीय सांस्कृतिक समन्वय के लिए दिया जानेवाला केरल सरकार का प्रथम 'भारत भवन विवर्तक रत्नम् अवार्ड' प्राप्त प्रो.डी.तंकप्पन नायर

जन्म	: २९-१२-१९३२ केरल के तिरुवनन्तपुरम जिले में
माताश्री का नाम	: श्रीमती एल.देवकी अम्मा
पिताश्री का नाम	: श्री. कुञ्जन पिल्लै
शिक्षा	: एम.ए. (हिन्दी), आग्रा विश्व विद्यालय
सेवाकार्य	: पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग बिषपमूर कॉलेज, मावेलिक्करा, केरल
पत्नी	: जी.जयकुमारी

पुत्र : रंत व सजित

साहित्यिक उपलब्धियाँ : मौलिक रचनाओं के अतिरिक्त हिन्दी /मलयालम/ अंग्रेजी में परस्पर अनुवाद किया है. विश्व साहित्य की विख्यात कृतियों का अनुवाद मलयालम में किया है. हिन्दी में मलयालम की कुछ कृतियों का अनुवाद किया है.

अब तक की सभी प्रकाशित कृतियों की सूची :

प्रकाशित कृतियाँ (मलयालम में)	**प्रकाशक का नाम**
१. पावङ्डल (दो भागों में) "Less Miserables" का संक्षिप्त अनुवाद	: बालवाटी पब्लिकेशन्स, पूजप्पुरा, तिरुवनन्तपुरम
२. पुराणकथकळ्	: सहोदरन पब्लिकेशन्स, तिरुवनन्तपुरम
३. अन्नाकरिनेना "Anna Karenena" का संक्षिप्त अनुवाद	: सहोदरन पब्लिकेशन्स, तिरुवनन्तपुरम
४. अम्मा 'Mother' का संक्षिप्त अनुवाद	: सहोदरन पब्लिकेशन्स, तिरुवनन्तपुरम
५. मून्नु पोरोळिकळ् 'Three Marketeers' का संक्षिप्त अनुवाद	: सहोदरन पब्लिकेशन्स, तिरुवनन्तपुरम
६. आषिक्कटियिल 'Twenty thousand leagues का संक्षिप्त अनुवाद	: डी.सी.बुक्स, कोट्टयम
७. नोत्रदामिले कूनन 'Hunchback of Notreadam' का संक्षिप्त अनुवाद	: डी.सी.बुक्स, कोट्टयम
८. अवसानत्ते मोहिकन 'The last of the Mohican' का संक्षिप्त अनुवाद	: डी.सी.बुक्स, कोट्टयम
९. कुऱ्ऱवुं शिक्षयुं 'Crime and Punishment' का संक्षिप्त अनुवाद	: डी.सी.बुक्स, कोट्टयम
१०. गुरु समक्षं ओरु हिमालयन योगियुटे आत्मकथा श्री.एम.द्वारा रचित 'Apprenticed to a Himalayan Master, A Yogi's Autobiography का अनुवाद	: डी.सी.बुक्स, कोट्टयम

११.'हृदयकमलत्तिले रत्नम' सनातन धर्मत्तिन्टे शाश्वत मूल्यङ्ङल 'A jewel in the Lotus, Deeper aspects of Hinduism' का अनुवाद	: डी.सी.बुक्स, कोट्टयम
१२. 'ऋषीश्वरन्मारुटे दिव्यदर्शनम्' श्री.एम द्वारा रचित 'Wisdom of the Rishis' का अनुवाद	: डी.सी.बुक्स, कोट्टयम
१३.'आरण्यकम्' हिमांशुजोशी द्वारा रचित हिन्दी उपन्यास 'अरण्य' का अनुवाद	: परिधि पब्लिकेशन्स, तिरुवनन्तपुरम -१४
१४. 'कंदीदे' वोल्टेयर द्वारा रचित 'Candid' उपन्यास का अनुवाद	: -"- -"-
१५. हितोपदेश कथकळ्	: -"- -"-

संपादित कृतियाँ (हिन्दी में)	**प्रकाशक का नाम**
१. पंचभाषत्त भारतीय साहित्य	केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-१४
२. कानायि कुञ्ञिरामन की कवितायें	केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, तिरुवनन्तपुरम - ४
३. के.एल.पॉल.की कहानियाँ	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा उत्तर प्रदेश
४. के.एल.पॉल की प्रतिनिधि कहानियाँ (मुख्य अनुवादक) संपादक डॉ.आरसु	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा उत्तर प्रदेश
५. अनूदित कृति (हिन्दी में) नचिकेता	पी.रविकुमार द्वारारचित मलयालम काव्य का हिन्दी अनुवाद प्रकाशक : जवाहर पुस्तकालय मथुरा, उत्तर प्रदेश.
पूर्व प्राप्त पुरस्कार का विवरण	वर्ष २००७-०८ के लिए महाराष्ट्र हिन्दी साहित्य अकादमी के द्वारा अखिल भारतीय हिन्दी सेवा पुरस्कार दिया गया है.
विशेष	पन्द्रह वर्ष से अधिक समय केरल हिंदी प्रचार सभा की कार्यकारिणी समिति के सदस्य रहे. सम्प्रति केरल हिन्दी साहित्य अकादमी की कार्यककारिणी समिति के सदस्य.